

سُورَةُ الزُّكْرِفِ

Surah 43 — Az-Zukhruf (Ornaments of gold) · Meccan · 89 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हा मीम

2

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ

रौशन किताब (कुरान) की कसम

3

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا ۚ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

हमने इस किताब को अरबी ज़बान कुरान ज़रूर बनाया है ताकि तुम समझो

4

وَإِنَّهُ ۚ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلَىٰ حَكِيمٍ

और बेशक ये (कुरान) असली किताब (लौह महफूज़) में (भी जो) मेरे पास है लिखी हुई है (और) यकीनन बड़े रूतबे की (और) पुरअज़ हिक्मत है

5

أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ

भला इस वजह से कि तुम ज्यादाती करने वाले लोग हो हम तुमको नसीहत करने से मुँह मोड़ेंगे (हरगिज़ नहीं)

6

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيٍّ ۚ فِي الْأَوَّلِينَ

और हमने अगले लोगों को बहुत से पैग़म्बर भेजे थे

7

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ ۚ يَسْتَهْزِءُونَ

और कोई पैग़म्बर उनके पास ऐसा नहीं आया जिससे इन लोगों ने ठट्ठे नहीं किए हो

8

فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا ۖ وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ

तो उनमें से जो ज्यादा ज़ोरावर थे तो उनको हमने हलाक कर मारा और (दुनिया में) अगलों के अफ़साने जारी हो गए

9

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ

और (ऐ रसूल) अगर तुम उनसे पूछो कि सारे आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया तो वह ज़रूर कह देंगे कि उनको बड़े वाकिफ़कार ज़बरदस्त (खुदा ने) पैदा किया है

10

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا ۖ وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا ۖ لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

जिसने तुम लोगों के वास्ते ज़मीन का बिछौना बनाया और (फिर) उसमें तुम्हारे नफ़े के लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह मालूम करो

11

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ بِقَدَرٍ ۖ فَأَنْشَرْنَا بِهِ ۖ بَلْدَةً ۖ مَيِّتَةً ۖ كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ

और जिसने एक (मुनासिब) अन्दाजे के साथ आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने उसके (ज़रिए) से मुर्दा (परती) शहर को ज़िन्दा (आबाद) किया उसी तरह तुम भी (क़यामत के दिन क़ब्रों से) निकाले जाओगे

12

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ

और जिसने हर किस्म की चीज़ें पैदा कीं और तुम्हारे लिए कश्तियां बनायीं और चारपाए (पैदा किए) जिन पर तुम सवार होते हो

13

لِتَسْتَوُوا ۚ عَلَىٰ ظُهُورِهِ ۖ ثُمَّ تَذْكُرُوا ۖ نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا ۖ

سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ ۖ مُقْرِنِينَ

ताकि तुम उसकी पीठ पर चढ़ो और जब उस पर (अच्छी तरह) सीधे हो बैठो तो अपने परवरदिगार का एहसान माना करो और कहो कि वह (खुदा हर ऐब से) पाक है जिसने इसको हमारा ताबेदार बनाया हालाँकि हम तो ऐसे (ताक़तवर) न थे कि उस पर क़ाबू पाते

وَأِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ

और हमको तो यकीनन अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है

وَجَعَلُوا ۚ لَهُ ۚ مِنْ عِبَادِهِ ۚ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۚ مُّبِينٌ

और उन लोगों ने उसके बन्दों में से उसके लिए औलाद करार दी है इसमें शक नहीं कि इन्सान खुल्लम खुल्ला बड़ा ही नाशक्रा है

أَمْ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ ۚ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ

क्या उसने अपनी मखलूक़ात में से खुद तो बेटियाँ ली हैं और तुमको चुनकर बेटे दिए हैं

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ۖ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا ۖ وَهُوَ كَظِيمٌ

हालॉकि जब उनमें किसी शख्स को उस चीज़ (बेटी) की खुशखबरी दी जाती है जिसकी मिसल उसने खुदा के लिए बयान की है तो वह (गुस्से के मारे) सियाह हो जाता है और ताव पेंच खाने लगता है

أَوْ مَن يَنْشَوٰ۟ا۟ ۚ فِی الْحَلِیَةِ وَهُوَ فِی الْخِصَامِ غَیْرُ مُبِیۡنٍ ۚ

क्या वह (औरत) जो ज़ेवरों में पाली पोसी जाए और झगड़े में (अच्छी तरह) बात तक न कर सके (खुदा की बेटी हो सकती है)

وَجَعَلُوا ۚ الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبْدُ الرَّحْمَنِ إِنَّا ۚ أَشْهَدُوا ۚ خَلَقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ

और उन लोगों ने फ़रिश्तों को कि वह भी खुदा के बन्दे हैं (खुदा की) बेटियाँ बनायी हैं लोग फरिश्तों की पैदाइश क्यों खड़े देख रहे थे अभी उनकी शहादत क़लम बन्द कर ली जाती है

وَقَالُوا ۚ لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ ۚ مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ

और (कयामत) में उनसे बाज़पुर्स की जाएगी और कहते हैं कि अगर खुदा चाहता तो हम उनकी परसतिश न करते उनको उसकी कुछ खबर ही नहीं ये लोग तो बस अटकल पच्चू बातें किया करते हैं

أَمْ ءَاتَيْنَاهُمْ كِتَابًا ۖ مِنْ قَبْلِهِ ۚ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ

या हमने उनको उससे पहले कोई किताब दी थी कि ये लोग उसे मज़बूत थामें हुए हैं

بَلْ قَالُوا ۚ إِنَّا وَجَدْنَا ءَابَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ ۚ وَإِنَّا عَلَىٰ ءَاثِرِهِم مُّهْتَدُونَ

बल्कि ये लोग तो ये कहते हैं कि हमने अपने बाप दादाओं को एक तरीके पर पाया और हम उनको क़दम ब क़दम ठीक रास्ते पर चले जा रहे हैं

وَكَذَلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ ۚ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا ءَابَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ ۚ وَإِنَّا عَلَىٰ ءَاثِرِهِم مُّقْتَدُونَ

और (ऐ रसूल) इसी तरह हमने तुमसे पहले किसी बस्ती में कोई डराने वाला (पैग़म्बर) नहीं भेजा मगर वहाँ के खुशहाल लोगों ने यही कहा कि हमने अपने बाप दादाओं को एक तरीके पर पाया, और हम यक़ीनी उनके क़दम ब क़दम चले जा रहे हैं

ۚ قُلْ أُولُو جِبْتِكُمْ بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ ءَابَاءَكُمْ ۚ قَالُوا ۚ إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ ۚ كُفْرُونَ

(इस पर) उनके पैग़म्बर ने कहा भी जिस तरीके पर तुमने अपने बाप दादाओं को पाया अगरचे मैं तुम्हारे पास इससे बेहतर राहे रास्त पर लाने वाला दीन लेकर आया हूँ (तो भी न मानोगे) वह बोले (कुछ हो मगर) हम तो उस दीन को जो तुम देकर भेजे गए हो मानने वाले नहीं

فَأَنْتَقِمْنَا مِنْهُمْ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُكَذِّبِينَ

तो हमने उनसे बदला लिया (तो ज़रा) देखो तो कि झुठलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ ﴿٢٦﴾ إِنَّنِي بَرَاءٌ ﴿٢٧﴾ مِمَّا تَعْبُدُونَ

(और वह वस्तु याद करो) जब इब्राहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप (आज़र) और अपनी क़ौम से कहा कि जिन चीज़ों को तुम लोग पूजते हो मैं यकीनन उससे बेज़ार हूँ

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ ﴿٢٨﴾ سَيَهْدِينِ

मगर उसकी इबादत करता हूँ, जिसने मुझे पैदा किया तो वही बहुत जल्द मेरी हिदायत करेगा

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً ﴿٢٩﴾ بَاقِيَةً ﴿٣٠﴾ فِي عَقِبِهِ ﴿٣١﴾ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

और उसी (ईमान) को इब्राहीम ने अपनी औलाद में हमेशा बाक़ी रहने वाली बात छोड़ गए ताकि वह (खुदा की तरफ रूजू) करें

بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءِ وَءَابَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ ﴿٣٢﴾ مُبِينٌ ﴿٣٣﴾

बल्कि मैं उनको और उनके बाप दादाओं को फायदा पहुँचाता रहा यहाँ तक कि उनके पास (दीने) हक़ और साफ़ साफ़ बयान करने वाला रसूल आ पहुँचा

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا ﴿٣٤﴾ هَذَا سِحْرٌ ﴿٣٥﴾ وَإِنَّا بِهِ ﴿٣٦﴾ كُفْرُونَ

और जब उनके पास (दीन) हक़ आ गया तो कहने लगे ये तो जादू है और हम तो हरगिज़ इसके मानने वाले नहीं

وَقَالُوا ﴿٣٧﴾ لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ ﴿٣٨﴾ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ

और कहने लगे कि ये कुरान इन दो बस्तियों (मक्के ताएफ़) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं नाज़िल किया गया

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ
وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ ۚ دَرَجَاتٍ ۚ لِيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُلُوفًا ۚ
وَرَحِمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۚ مِمَّا يَجْمَعُونَ

ये लोग तुम्हारे परवरदिगार की रहमत को (अपने तौर पर) बाँटते हैं हमने तो इनके दरमियान उनकी रोज़ी दुनियावी ज़िन्दगी में बाँट ही दी है और एक के दूसरे पर दर्जे बुलन्द किए हैं ताकि इनमें का एक दूसरे से खिदमत ले और जो माल (मतआ) ये लोग जमा करते फिरते हैं खुदा की रहमत (पैगम्बर) इससे कहीं बेहतर है

وَلَوْلَا أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً ۚ وَحِدَةً ۚ لَجَعَلْنَا لِمَنْ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقْفًا ۚ
مِّنْ فِضَّةٍ ۚ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ

और अगर ये बात न होती कि (आखिर) सब लोग एक ही तरीके के हो जाएँगे तो हम उनके लिए जो खुदा से इन्कार करते हैं उनके घरों की छतें और वही सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं (उतरते हैं)

وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابٌ ۚ وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَكُونَ

और उनके घरों के दरवाज़े और वह तख्त जिन पर तकिये लगाते हैं चाँदी और सोने के बना देते

وَزُخْرَفًا ۚ ۚ وَإِنْ كُلُّ ذَلِكَ لَمَّا مَتَّعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ

ये सब साज़ो सामान, तो बस दुनियावी ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) साज़ो सामान हैं (जो मिट जाएँगे) और आखेरत (का सामान) तो तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ खास परहेज़गारों के लिए है

وَمَنْ يَعِشْ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقِيضْ لَهُ ۚ شَيْطَانًا ۚ فَهُوَ لَهُ ۚ قَرِينٌ ۚ

और जो शरूख़ खुदा की चाह से अन्धा बनता है हम (गोया खुद) उसके वास्ते शैतान मुक़रर कर देते हैं तो वही उसका (हर दम का) साथी है

وَأَنَّهُمْ لَيَصْدُوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ

और वह (शयातीन) उन लोगों को (खुदा की) राह से रोकते रहते हैं बावजूद इसके वह उसी ख्याल में हैं कि वह यक़ीनी राहें रास्त पर हैं

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ

यहाँ तक कि जब (क़यामत में) हमारे पास आएगा तो (अपने साथी शैतान से) कहेगा काश मुझमें और तुममें पूरब पश्चिम का फ़ासला होता गरज़ (शैतान भी) क्या ही बुरा रफ़ीक़ है

وَلَنْ يَنْفَعَكُمْ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنْكُم فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ

और जब तुम नाफरमानियाँ कर चुके तो (शयातीन के साथ) तुम्हारा अज़ाब में शरीक होना भी आज तुमको (अज़ाब की कमी में) कोई फायदा नहीं पहुँचा सकता

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْى وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَلٍ مُّبِينٍ ۚ

तो (ऐ रसूल) क्या तुम बहरों को सुना सकते हो या अन्धे को और उस शख्स को जो सरीही गुमराही में पड़ा हो रास्ता दिखा सकते हो (हरगिज़ नहीं)

فَأِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ

तो अगर हम तुमको (दुनिया से) ले भी जाएँ तो भी हमको उनसे बदला लेना ज़रूरी है

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُونَ

या (तुम्हारी ज़िन्दगी ही में) जिस अज़ाब का हमने उनसे वायदा किया है तुमको दिखा दें तो उन पर हर तरह काबू रखते हैं

فَأَسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۚ

तो तुम्हारे पास जो वही भेजी गयी है तुम उसे मज़बूत पकड़े रहो इसमें शक़ नहीं कि तुम सीधी राह पर हो

وَإِنَّهُ ۚ لَذِكْرٌ ۚ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ

और ये (क़ुरान) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है और अनक़रीब ही तुम लोगों से इसकी बाज़पुर्स की जाएगी

45

وَسَلِّ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ ءَالِهَةً ۚ يُعْبُدُونَ

और हमने तुमसे पहले अपने जितने पैग़म्बर भेजे हैं उन सब से दरियाफ्त कर देखो क्या हमने खुदा कि सिवा और माबूद बनाए थे कि उनकी इबादत की जाए

46

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और हम ही ने यक़ीनन मूसा को अपनी निशानियाँ देकर फिरऔन और उसके दरबारियों के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा था तो मूसा ने कहा कि मैं सारे जहाँन के पालने वाले (खुदा) का रसूल हूँ

47

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ

तो जब मूसा उन लोगों के पास हमारे मौजिज़े लेकर आए तो वह लोग उन मौजिज़ों की हँसी उड़ाने लगे

48

وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ ءَايَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۚ وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

और हम जो मौजिज़ा उन को दिखाते थे वह दूसरे से बड़ कर होता था और आखिर हमने उनको अज़ाब में गिरफ्तार किया ताकि ये लोग बाज़ आएँ

49

وَقَالُوا ۚ يَأَيُّهُ السَّاحِرُ أَدْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ

और (जब) अज़ाब में गिरफ्तार हुए तो (मूसा से) कहने लगे ऐ जादूगर इस एहद के मुताबिक़ जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुमसे किया है हमारे वास्ते दुआ कर

50

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ

(अगर अब की छूटे) तो हम ज़रूर ऊपर आ जाएँगे फिर जब हमने उनसे अज़ाब को हटा दिया तो वह फौरन (अपना) अहद तोड़ बैठे

51

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ ۖ قَالَ يَاقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ

और फिरऔन ने अपने लोगों में पुकार कर कहा ऐ मेरी क्रौम क्या (ये) मुल्क मिस्र हमारा नहीं और (क्या) ये नहरें जो हमारे (शाही महल के) नीचे बह रही हैं (हमारी नहीं) तो क्या तुमको इतना भी नहीं सूझता

52

أَمْ أَنَا خَيْرٌ ۚ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ ۚ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ

या (सूझता है कि) मैं इस शरूश (मूसा) से जो एक ज़लील आदमी है और (हकले पन की वजह से) साफ़ गुफ्तगू भी नहीं कर सकता

53

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسُورَةٌ ۚ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَأِكَةُ مُقْتَرِنِينَ

कहीं बहुत बेहतर हूँ (अगर ये बेहतर है तो इसके लिए सोने के कंगन) (खुदा के हों से) क्यों नहीं उतारे गये या उसके साथ फ़रिश्ते जमा होकर आते

54

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ ۚ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ

गरज़ फिरऔन ने (बातें बनाकर) अपनी क्रौम की अक़ल मार दी और वह लोग उसके ताबेदार बन गये बेशक वह लोग बदकार थे ही

55

فَلَمَّا ءَاسَفُونَا اُنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ

गरज़ जब उन लोगों ने हमको झुझला दिया तो हमने भी उनसे बदला लिया तो हमने उन सब (के सब) को डुबो दिया

56

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا ۚ وَمَثَلًا لِّلْءَاخِرِينَ

फिर हमने उनको गया गुज़रा और पिछ्लों के वास्ते इबरत बना दिया

57

ۚ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ

और (ऐ रसूल) जब मरियम के बेटे (ईसा) की मिसाल बयान की गयी तो उससे तुम्हारी क्रौम के लोग खिलखिला कर हंसने लगे

وَقَالُوا ۚ ءَالِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ

और बोल उठे कि भला हमारे माबूद अच्छे हैं या वह (ईसा) उन लोगों ने जो ईसा की मिसाल तुमसे बयान की है तो सिर्फ झगड़ने को

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا ۚ لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ

बल्कि (हक़ तो यह है कि) ये लोग हैं झगड़ालू ईसा तो बस हमारे एक बन्दे थे जिन पर हमने एहसान किया (नबी बनाया और मौजिज़े दिये) और उनको हमने बनी इसराईल के लिए (अपनी कुदरत का) नमूना बनाया

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً ۚ فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ

और अगर हम चाहते तो तुम ही लोगों में से (किसी को) फ़रिश्ते बना देते जो तुम्हारी जगह ज़मीन में रहते

وَإِنَّهُ ۚ لَعِلْمٌ ۚ لِلْسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَذَا صِرَاطٌ ۚ مُسْتَقِيمٌ ۚ

और वह तो यक़ीनन क़यामत की एक रौशन दलील है तुम लोग इसमें हरगिज़ यक़ न करो और मेरी पैरवी करो यही सीधा रास्ता है

وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ ۚ إِنَّهُ ۚ لَكُمْ عَدُوٌّ ۚ مُّبِينٌ ۚ

और (कहीं) शैतान तुम लोगों को (इससे) रोक न दे वही यक़ीनन तुम्हारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन है

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۚ فَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَأَطِيعُوا

और जब ईसा वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आये तो (लोगों से) कहा मैं तुम्हारे पास दानाई (की किताब) लेकर आया हूँ ताकि बाज़ बातें जिन में तुम लोग एख़्तेलाफ़ करते थे तुमको साफ़-साफ़ बता दूँ तो तुम लोग खुदा से डरो और मेरा कहा मानो

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَذَا صِرَاطٌ ۚ مُسْتَقِيمٌ ۚ

बेशक खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो यही सीधा रास्ता है

65

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ إِلِيمٍ

तो इनमें से कई फिरके उनसे एख्तेलाफ करने लगे तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन पर दर्दनाक दिन के अज़ब से अफ़सोस है

66

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

क्या ये लोग बस क़यामत के ही मुन्ज़िर बैठे हैं कि अचानक ही उन पर आ जाए और उन को ख़बर तक न हो

67

الْأَخِلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ

(दिली) दोस्त इस दिन (बाहम) एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार कि वह दोस्त ही रहेंगे

68

يُعْبَادُ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ

और खुदा उनसे कहेगा ऐ मेरे बन्दों आज न तो तुमको कोई ख़ौफ़ है और न तुम ग़मगीन होंगे

69

الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ

(यह) वह लोग हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और (हमारे) फ़रमाबरदार थे

70

ادْخُلُوا ۖ الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ

तो तुम अपनी बीवियों समेत एजाज़ व इकराम से बेहिश्त में दाखिल हो जाओ

71

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ ۖ مِنْ ذَهَبٍ ۖ وَأَكْوَابٍ ۖ ۚ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ
الْأَعْيُنُ ۚ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

उन पर सोने की एक रिक़ाबियों और प्यालियों का दौर चलेगा और वहाँ जिस चीज़ को जी चाहे और जिससे आँखें लज्ज़त उठाएं (सब मौजूद हैं) और तुम उसमें हमेशा रहोगे

72

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

और ये जन्नत जिसके तुम वारिस (हिस्सेदार) कर दिये गये हो तुम्हारी कारगुजारियों का सिला है

73

لَكُمْ فِيهَا فُكْهَةٌ ۚ كَثِيرَةٌ ۚ مِنْهَا تَأْكُلُونَ

वहाँ तुम्हारे वास्ते बहुत से मेवे हैं जिनको तुम खाओगे

74

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ

(गुनाहगार कुफ़ार) तो यक्रीकन जहन्नुम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे

75

لَا يَفْتَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ

जो उनसे कभी नागा न किया जाएगा और वह इसी अज़ाब में नाउम्मीद होकर रहेंगे

76

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ

और हमने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह लोग खुद अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं

77

وَنَادَوْا ۚ يٰمَلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ مَكِثُونَ

और (जहन्नुमी) पुकारेंगे कि ऐ मालिक (दरोगा ए जहन्नुम कोई तरीक़ करे) तुम्हारा परवरदिगार हमें मौत ही दे दे वह जवाब देगा कि तुमको इसी हाल में रहना है

78

لَقَدْ جِئْتُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كُرْهُونَ

(ऐ कुफ़ार मक्का) हम तो तुम्हारे पास हक़ लेकर आये हैं तुम मे से बहुत से हक़ (बात से चिढ़ते) हैं

79

أَمْ أَبْرَمُوا ۚ أَمْ ۚ فَإِنَّا مُبْرِمُونَ

क्या उन लोगों ने कोई बात ठान ली है हमने भी (कुछ ठान लिया है)

أَمْ يَحْسُبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ؟ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ

क्या ये लोग कुछ समझते हैं कि हम उनके भेद और उनकी सरगोशियों को नहीं सुनते हों (ज़रूर सुनते हैं) और हमारे फ़रिश्ते उनके पास हैं और उनकी सब बातें लिखते जाते हैं

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ ؟ فَأَنَا ؟ أَوَّلُ الْعَبْدِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर खुदा की कोई औलाद होती तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत को तैयार हूँ

سُبْحَنَ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ

ये लोग जो कुछ बयान करते हैं सारे आसमान व ज़मीन का मालिक अर्श का मालिक (खुदा) उससे पाक व पाकीज़ा है

فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا ؟ وَيَلْعَبُوا ؟ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ

तो तुम उन्हें छोड़ दो कि पड़े बक बक करते और खेलते रहते हैं यहाँ तक कि जिस दिन का उनसे वायदा किया जाता है

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌ ؟ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهٌ ؟ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ

उनके सामने आ मौजूद हो और आसमान में भी (उसी की इबादत की जाती है और वही ज़मीन में भी माबूद है और वही वाकिफ़कार हिकमत वाला है

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ ؟ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ ؟ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

और वही बहुत बाबरकत है जिसके लिए सारे आसमान व ज़मीन और दोनों के दरमियान की हुकुमत है और क़यामत की ख़बर भी उसी को है और तुम लोग उसकी तरफ लौटाए जाओगे

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

और खुदा के सिवा जिनकी ये लोग इबादत करते हैं वह तो सिफारिश का भी ए़स्तेयार नहीं रखते मगर (हाँ) जो लोग समझ बूझ कर हक़ बात (तौहीद) की गवाही दें (तो ख़ैर)

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ

और अगर तुम उनसे पूछोगे कि उनको किसने पैदा किया तो ज़रूर कह देंगे कि अल्लाह ने फिर (बावजूद इसके) ये कहाँ बहके जा रहे हैं

وَقِيلَ ۖ يَرْبِّ إِنَّا هُوَ ۖ قَوْمٌ ۚ لَا يُؤْمِنُونَ

और (उसी को) रसूल के उस क़ौल का भी इल्म है कि परवरदिगार ये लोग हरगिज़ ईमान न लाएँगे

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

तो तुम उनसे मुँह फेर लो और कह दो कि तुम को सलाम तो उन्हें अनक़रीब ही (शरारत का नतीजा) मालूम हो जाएगा